ममता

Draft COPY

संवाद पत्र

पूर्वोत्तर सीमा रेल
निर्माण संगठन

अंक: 24 वर्ष : छठा मालीगांव, गुवाहाटी - 11 त्रैमासिक अक्तूबर, 2012

माननीय मुख्यमंत्री, मेघालय द्वारा मेंदीपथार स्टेशन का शिलान्यास

शिलान्यास के दौरान मंच पर डॉ. मुकुल एम. संगमा, माननीय मुख्यमंत्री, मेघालय, श्री ए.टी. मंडल, माननीय, परिवहन मंत्री आदि, श्रीमती अम्पारीन लिंडो, माननीय शहरी विकास मंत्री, श्री सालेंग ए. संगमा, माननीय समुदाय एवं ग्रामीण विकास मंत्री, श्री ए.पी. मिस्र, सदस्य इंजीनियरी, रेलवे बोर्ड, श्री आर.एस. विर्दी, महाप्रबंधक/ पू.सी. रेल व श्री ए.के. वर्मा, महाप्रबंधक/पू.सी.रेल/निर्माण

डॉ. मुकुल एम. संगमा, माननीय मुख्यमंत्री, मेघालय ने श्री ए.टी. मंडल, माननीय, परिवहन मंत्री आदि, श्रीमती अम्पारीन लिंडो, माननीय शहरी विकास मंत्री, श्री सालेंग ए. संगमा, माननीय समुदाय एवं ग्रामीण विकास मंत्री, श्री ए.पी. मिस्र, सदस्य इंजीनियरी, रेलवे बोर्ड, श्री आर.एस. विर्दी, महाप्रबंधक/ पू.सी. रेल व श्री ए.के. वर्मा, महाप्रबंधक/पू.सी.रेल/निर्माण की गरिमामयी उपस्थिति में दिनांक 8.9.2012 को दुधनोई-मेंदीपथार नई बीजी लाइन के अंतर्गत मेंदीपथार स्टेशन का शिलान्यास किया। असम में दुधनोई से मेघालय में मेंदीपथार तक 86.23 करोड़ रूपए की लागत से विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत किया गया था। दुधनोई-मेंदीपथार का संरेखण असम के ग्वालपाड़ा जिले के मौजूदा दुधनोई स्टेशन से रंगिया मंडल के न्यू बंगाईगांव-ग्वालपाड़ा-कामाख्या मार्ग से होकर मेघालय के ईस्ट गारो हिल्स जिले (वर्तमान नॉर्थ गारो हिल्स) के मेंदीपथार तक गुजरता है। इस परियोजना के अंतर्गत असम में कुल लम्बाई 9.75 कि.मी. तथा मेघालय में कुल 10.00 कि.मी. की लम्बाई समाहित है। यातायात सर्वेक्षण के अनुसार दुधनोई-मेंदीपथार सेक्शन में एक जोड़ी यात्री गाड़ी तथा एक माल गाड़ी दैनिक चलेगी। भारत सरकार ने विजन 20-20 के माध्यम से सभी पूर्वोत्तर राज्यों की राजधानियों अर्थात अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर, नागालैंड, मिजोराम, मेघालय और सिक्किम को जोड़ने की योजना बनाई है जिसके अंतर्गत त्रिपुरा राज्य पहले ही वर्ष 2008 में रेल नेटवर्क से जोड़ा जा चुका है। इसी क्रम में मेंदीपथार, मेघालय का पहला रेल स्टेशन होगा तथा दुधनोई-मेंदीपथार रेल लाइन मेघालय की पहली रेल लाइन होगी जिससे मेघालय के लोगों की बहुप्रतीक्षित मांग पूरी होगी। दुधनोई-मेंदीपथार रेल लाइन के कारण यह क्षेत्र यात्री आवागमन के साथ ही माल परिवहन के लिए सभी भारतीय रेल नेटवर्क से जुड़ जाएगा, जिससे इस क्षेत्र के लोगों के लिए विकास एवं समृद्धि का द्वार खोलेगा।

संरक्षक	मुख्य संपादक	संपादक	सहयोग
– श्री ए.के. वर्मा	श्री हरपाल सिंह	श्री पी. के. सिंह	श्रीमती रंजु झा
महाप्रबंधक/निर्माण	मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि	उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि	वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/नि

66वां स्वतंत्रता दिवस समारोह

राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए श्री अरविंद शेवरे, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/नि-2 (बायें से दूसरे) एवं श्री हरपाल सिंह, मुख्य इंजीनियर/नि/मुख्यालय

66वें स्वतंत्रता दिवस समारोह पू.सी. रेल/निर्माण संगठन में धूमधाम से मनाया गया। श्री अरविंद शेवरे, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-2 ने कार्यालय परिसर में ध्वजारोहण किया। उन्होंने उपस्थित अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके परिजनों को संबोधित करते हुए 66 वें स्वतंत्रता दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने अपने संबोधन में अधिकारियों व कर्मचारियों के कार्यों और कर्त्तव्यनिष्ठा की सराहना की और निर्माण संगठन की प्रगति का उल्लेख किया।

सद्भावना दिवस का आयोजन

दिनांक 20.8.2012 को पूर्व प्रधान मंत्री, स्वर्गीय राजीव गांधी की जन्मतिथि के उपलक्ष्य में महाप्रबंधक/निर्माण कार्यालय परिसर में सद्भावना दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री हरपाल सिंह, मुख्य इंजीनियर/निर्माण/मुख्यालय ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्रीय अखण्डता तथा सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सद्भावना दिवस की शपथ दिलाई।

रायगंज से इटाहार तथा इटाहार से बुनियादपुर तक नई बड़ी लाइन का शिलान्यास

पूर्व रेलमंत्री श्री मुकुल राय तथा सुश्री ममता बनर्जी माननीय मुख्य मंत्री पश्चिम बंगाल ने दिनांक 30.08.2012 को रायगंज से इटाहार तथा इटाहार से बुनियादपुर तक नई बड़ी लाइन का शिलान्यास किया।

रायगंज से इटाहार नई बड़ी लाइन परियोजना रेलवे बजट वर्ष 2010-11 में 129.30 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से स्वीकृत की गई थी। 22.16 कि.मी. लम्बी इस परियोजना में पश्चिम बंगाल के उत्तर दिनाजपुर जिला समाहित है। इसमें 41 छोटे पुल एवं 05 बड़े पुल होंगे। सबसे बड़े पुल की लम्बाई 3x30.5 मीटर है। प्रत्येक ब्लॉक स्टेशन पर रूट सेटिंग टाइप पैनल इंटरलॉकिंग के साथ एम ए सी एल एस सिगनलिंग प्रणाली है और समूचे सेक्शन में डिजिटल एक्सेल काउंटर्स द्वारा पूर्ण ब्लॉक कार्यरत है। मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों के लिए अधिकतम सेक्शनल गति 100 कि.मी. प्रति घंटा है जबकि माल गाड़ियों के लिए यह 65 कि.मी. प्रति घंटा है।

इटाहार से बुनियादपुर नई बड़ी लाइन परियोजना वर्ष 2011-12 में 262.27 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से नई बड़ी लाइन परियोजना स्वीकृत की गई थी। 27.096 कि.मी. लम्बी इस परियोजना में पश्चिम बंगाल का उत्तर एवं दक्षिण दिनाजपुर जिला समाहित है। इसमें 39 छोटे पुल होंगे। सबसे बड़े पुल की लम्बाई 2x30.5 मीटर है। प्रत्येक ब्लॉक स्टेशन पर रूट सेटिंग टाइप पैनल इंटरलॉकिंग के साथ एम ए सी एल एस सिगनलिंग प्रणाली है और समूचे सेक्शन में डिजिटल एक्सेल काउंटर्स द्वारा पूर्ण ब्लॉक कार्यरत है।

इस परियोजना को दिनांक 29.05.2012 को प्रकाशित गजट अधिसूचना द्वारा "विशेष रेलवे परियोजना" घोषित किया गया। अंतिम स्थल सर्वेक्षण पहले ही पूरा कर लिया गया है और भूमि योजना की तैयारी प्रगति पर है।

इन दो लाइनों के निर्माण से रायगंज से बुनियादपुर के बीच रेल संयोजन स्थापित होंगे और इस क्षेत्र के लोग अत्याधिक लाभान्वित होंगे।

परियोजनाओं की विस्तृत समीक्षा हेतु बैठक

वर्ष 2012-13 के लक्षित परियोजनाओं की प्रगति तथा अन्य चालू परियोजनाओं की विस्तृत समीक्षा हेतु दिनांक 15.09.2012 को कोलकाता में एक बैठक आयोजित की गई।

राजभाषा सप्ताह समारोह, 2012

पूर्वोत्तर सीमा रेल/निर्माण संगठन में राजभाषा सप्ताह समारोह का आयोजन दिनांक 14.9.2012 से 21.09.2012 तक किया गया। "हिंदी दिवस" के शुअवसर पर श्री ए.एस. गरूड़, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 ने दिनांक 14.9.2012 को निर्माण संगठन में दीप प्रज्ज्वलित कर राजभाषा सप्ताह समारोह, 2012 का शुभारंभ किया। इस समारोह में अरविंद शेवरे, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-2, श्री हरपाल सिंह, मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण, श्री प्रदीप कुमार सिंह, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण, श्रीमती रंजु झा, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/निर्माण एवं संगठन के अन्य अधिकारी तथा कर्मचारीगण उपस्थित थे। राजभाषा सप्ताह के दौरान राजभाषा विभाग द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे-

राजभाषा प्रश्नोत्तरी, हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, हिंदी निबंध, हिंदी वाक्, श्रुतलेखन तथा रेल कर्मियों के बच्चों के लिए कविता एवं चित्रांकन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दिनांक 21.9.2012 को उक्त प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/नि/1 के कर कमलों से पुरस्कृत किया गया साथ ही हिंदी में सराहनीय कार्य करने के लिए संगठन के दो लिपिकों, एक टंकक एवं एक आशुलिपिक को भी पुरस्कार प्रदान करते हुए राजभाषा सप्ताह समारोह, 2012 का समापन घोषित किया गया।

स्वागत

श्री एफ. महमुद ने दिनांक 09-07.2012 को वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी/नि/1 का पदभार ग्रहण किया।

श्री अशोक कुमार (एस.ए.जी/आई.आर.एस. ई.ई) ने दिनांक 03-10.2012 को पश्चिम रेलवे से स्थानांतरण पर मुख्य विजली इंजीनियर/ निर्माण का पदभार ग्रहण किया।

स्थानांतरण

श्री अरविंद कुमार, मुख्य वाणिज्य प्रबंधक तथा मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण का दिनांक 27.07.2012 को पूर्वोत्तर रेल में स्थानांतरण हुआ।

श्री हीरा लाल, भंडार नियंत्रक/निर्माण का दिनांक 03.09.2012 को पू.सी. रेल, मुख्यालय में स्थानांतरण हुआ।

पदस्थापन

श्री हरपाल सिंह, मुख्य इंजीनियर/निर्माण/मुख्यालय ने दिनांक 07.09.2012 को महाप्रबंधक/नि के अनुमोदन पर मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण का कार्यभार ग्रहण किया।

उपलब्धि

पूर्वोत्तर सीमा रेल/निर्माण संगठन के श्रीमती मुन मुन शर्मा/राजभाषा अधीक्षक को पूर्वोत्तर सीमा रेल के विभिन्न सामाजिक कार्यों में उनके द्वारा दी गई विशेष योगदान हेतु रेल के केंद्रीय महिला कल्याण संगठन, नई दिल्ली द्वारा इस वर्ष का उत्कृष्ट पुरस्कार प्रदान किया गया। निर्माण संगठन श्रीमती शर्मा को इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

राष्ट्रीय परियोजनाएं

जिरिबाम से तुपुल तक नई बीजी लाइन (84 कि.मी.)

1282.66 हेक्टेयर भूमि में से 1089.022 हेक्टेयर भू-अधिग्रहण, 514.45 लाख क्यूबिक मीटर में से 314.885 लाख क्यूबिक मीटर भू-कार्य, 84.0 कि.मी. में से 15.95 कि.मी. फॉर्मेशन, 107 में से 30 छोटे पुल, 6 में से 5 आर ओ बी/आर यू बी, 210000 में से 27000 क्यूबिक मीटर गिट्टी आपूर्ति और 39401.0 मीटर में से 3463.50 मीटर सुरंगीकरण का कार्य अब तक पूरा किया गया। 12.5 कि.मी. मुख्य लाइन एवं 1.20 कि.मी. लूप लाइन का ट्रैक लिंकिंग पूरा किया गया।

मानसून, वर्तमान सुरक्षा परिदृश्य और बहुधा बंद के कारण कार्य प्रगति बुरी तरह प्रभावित हुई है। राष्ट्रीय राजमार्ग-53 की बदतर स्थिति तथा कमजोर/क्षतिग्रस्त पुलों से भी निर्माण सामग्री और मशीनरी का कार्यस्थल तक आवागमन बाधित हो रहा है।

जिरिबाम-धोलाखाल (12.5 कि.मी.) सेक्शन पूरा किया गया और दिनांक 23-03-12 को इंजन चलाया गया।

बोगीबिल के निकट ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी एवं दक्षिणी तटों पर लिंक लाइनों सहित रेल-सह-सड़क पुल

पुल के उत्तरी तट तथा दक्षिणी तट रेल लिंक पर तटबंध, बड़े एवं छोटे पुलों, स्टेशन निर्माण कार्य पूरा किया जा चुका है।

दिनांक 08-12-2009 को बोगीबिल पुल परियोजना के साउथ बैंक सेक्शन पर मोरानहाट-चाउलखोवा (44 कि.मी.) रेल लिंक को चालू किया गया और दिनांक 29-01-2010 को सेक्शन ओपन लाइन को सुपुर्द किया गया।

उत्तरी और दक्षिणी मार्गदर्शी बांध का निर्माण अंतिम लेवल तक अर्थात आर एल 110.52 मीटर तक तथा संरक्षण कार्य अर्थात् साउसेज क्रेटस, ढाल पिचिंग एवं ग्राउंटिंग सहित अंतिम लेवल अर्थात आर एल 116 मी. तक संयुक्त पहुंच तटबंध कार्य पूरा हो गया है।

तेतेलिया से बरनीहाट तक नई बीजी लाइन (21.50 कि.मी.) (आजरा-बरनीहाट नई लाइन का वैकल्पिक संरेखण)

रेलवे बोर्ड के दिनांक 13-10-09 के पत्र संख्या 2001/डब्ल्यू-1/एन एफ/एन एल/सी ए/6-पार्ट के अनुसार आजरा-बरनीहाट नई लाइन के वैकल्पिक संरेखण के रूप में तेतेलिया-बरनीहाट का अध्ययन किया गया। असम और मेघालय की राज्य सरकारों एवं ओपन लाइन ने प्रस्तावित वैकल्पिक संरेखण को अनुमोदित कर दिया है। 19.2 कि.मी. सेक्शन असम में तथा 2.3 कि.मी. मेघालय में पड़ता है। तेतेलिया से बरनीहाट तक फाइनल लोकेशन सर्वे पूरा किया जा चुका है। रेलवे बोर्ड द्वारा दिनांक 05-08-2010 को कुल 384.04 करोड़ रूपए का विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत किया जा चुका है। असम में, पट्टा भूमि के लिए कुल 13 भू-अर्जन मामलों में से 12 भू-अर्जन मामले को सुपुर्द किया जा चुका है तथा अधिनिर्णय का 1 मामला प्रगति पर है।

दिमापुर से जुब्जा तक नई लाइन (88 कि.मी.)

दिमापुर से कोहिमा 123 कि.मी. तक संपूर्ण लंबाई के लिए एफ एल एस पूरा किया जा चुका है। भू-तकनीकी जांच प्रगति पर है (45.0 कि.मी. पूरा किया गया)। जैविक पार्क से होकर संरेखण गुजरने के कारण स्थानीय लोगों के सख्त विरोध की वजह से राज्य सरकार के अनुरोध पर कि.मी. 4.0 और कि.मी. 7.0 के बीच संरेखण प्रतिस्थापित किया गया। उपायुक्त/दिमापुर द्वारा दिमापुर-जुब्जा नई लाइन परियोजना के समस्या के समाधान के लिए दिनांक 14-12-2011 को एक बैठक आयोजित की गई।

अगरतला से सबरूम तक नई बीजी लाइन (110 कि.मी.)

अगरतला से सबरूम तक संपूर्ण लंबाई के लिए फाइनल लोकेशन सर्वे का कार्य तथा भूमि पर संरेखण की स्टेकिंग का कार्य पूरा किया गया। भू-तकनीकी जांच भी पूरी कर ली गई है। दिनांक 29-07-09 को रेलवे बोर्ड ने अगरतला से उदयपुर तक 44 कि.मी. के लिए 352.95 करोड़ रूपए का आंशिक विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत कर दिया है। उदयपुर से सबरूम तक शेष 66.0 कि.मी. सेक्शन के लिए कुल 777.67 करोड़ रूपए का पार्ट-III विस्तृत प्राक्कलन भी रेलवे बोर्ड द्वारा दिनांक 23-11-2010 को स्वीकृत किया जा चुका है।

450.54 हेक्टेयर भू-अधिग्रहण, 45.84 लाख क्यूबिक मीटर भू-कार्य, 10.30 कि.मी. फॉर्मेशन, 7 बड़े पुलों की उप संरचना और 4 अधिसंरचना, 48 छोटे पुल, 15 आर ओ बी, 13 आर यू बी तथा 11 एल एच एस एवं 22000 क्यूबिक मीटर गिट्टी आपूर्ति कार्य पूरे किए गए। 9.80 कि.मी. ट्रैक लिंकिंग पूरा किया जा चुका है।

भैरव-सैरंग (51.38 कि.मी.) तक नई बड़ी लाइन

भैरव-सैरंग (51.38 कि.मी.) तक नई बड़ी लाइन हेतु भूमि पर संरेखण का स्टेकिंग सहित फाइनल लोकेशन सर्वे पूरा किया जा चुका है। 12.0 कि.मी. भू-तकनीकी जाँच, 9.00 कि.मी. प्रतिरोधात्मक सर्वेक्षण भी पूरा किया गया। रेलवे बोर्ड ने दिनांक 01.09.2011 को कुल 2384.34 करोड़ रूपए का विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत कर दिया है।

सेवक से (44.33 कि.मी.) रंगपो तक नई बड़ी लाइन

कुल 3380.58 करोड़ रूपए का विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृति के लिए दिनांक 30.12.2009 को रेलवे बोर्ड में प्रस्तुत किया गया। दिनांक 03.08.2012 को रेलवे बोर्ड के नवीनतम टिप्पणी का अनुपालन किया गया।

परियोजना निष्पादन के लिए मेसर्स इरकॉन को सौंपी गई है और इरकॉन के साथ दिनांक 07.05.10 को एम ओ यू हस्ताक्षर किया गया।

बरनीहाट से शिलांग तक नई बड़ी लाइन (108.4 कि.मी.)

बरनीहाट से लाइलाड (20 कि.मी.) तक फाइनल लोकेशन सर्वे पूरा किया जा चुका है। मेघालय के एक एन जी ओ, खासी स्टूडेंट यूनियन (के एस यू) द्वारा नवंबर, 2010 में कार्य रोकने के पूर्व अगले 35 कि.मी. के लिए स्थलाकृति सर्वेक्षण पूरा किया गया। निर्माण-पूर्व कार्रवाईयों के लिए पार्ट-I विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत है।

कुमारघाट-अगरतला नई लाइन (109 कि.मी.)

कुमारघाट से मानु (20 कि.मी.) दिनांक 27.12.2002 को चालू किया गया।

मानु-अगरतला (89 कि.मी.) कार्य पूरा किया गया। यह सेक्शन एम जी ट्रेन सर्विस के लिए दिनांक 05.10.08 को चालू किया गया।

लिंक फिंगर्स सहित रंगिया-मुकोंगसेलेक आमान परिवर्तन (511.88 कि.मी.)

इस कार्यालय का दिनांक 07.09.05 के पत्र सं.डब्ल्यू/98/कॉन/रंगिया-एमजेडएस/भाग-II के अंतर्गत रंगिया-रंगापाड़ा के लिए कुल 327 करोड़ रूपया का पार्ट विस्तृत प्राक्कलन रेलवे बोर्ड द्वारा दिनांक 28.11.06 को पुलों तथा फार्मेशन के लिए कुल 75.27 करोड़ रूपए का सिविल इंजीनियरी प्राक्कलन स्वीकृत किया गया। रेलवे बोर्ड द्वारा 19.09.08 को शेष कार्य के लिए कुल 1480.96 करोड़ का पार्ट III विस्तृत प्राक्कलन स्वीकृत किया गया।

वित्तीय निष्पादन
(करोड़ रूपये में)

2011-2012 में निष्पादन

- खर्च = 2272.50

2012-2013 का परिव्यय

- मांग - 16 = 2375.74
- निक्षेप कार्य (रक्षा मंत्रालय) = 0.00

कुल = 2375.74

2012-2013 का खर्च

- सितंबर, 12 के दौरान खर्च (लगभग) = 137.05
- सितंबर,12 तक संचयी खर्च (लगभग)= 1442.34 करोड़ रूपये
- परिव्यय का खर्च (%) = 61.17 %

वर्कशॉप

कार्य	प्रगति	लक्ष्य
किशनगंज- ट्रेन परीक्षण सुविधा का विकास	90%	निधि की अनुपलब्धता तथा साइट क्लियरेंस के कारण कार्य बंद पड़ा है।
न्यू बंगाईगांव-वर्कशाप आरसीसी बाउंडरी वॉल	73%	3500 आरएम में से 2400 आरएम तक तथा 2.40 किमी पथ-वे में से 2.4 मीटर पथ-वे कार्य पूरा हुआ। दिनांक 7.6.10 से कार्य बंद है। आर एंड सी कार्य प्रगति पर है।
सिलिगुड़ी जंक्शन डीजल शेड-100 लोकोमेटिव को रखने के लिए डीजल लोकोशेड का विस्तार	87%	31.08.2011 कार्य प्रगति पर है।
सिलिगुड़ी जंक्शन-डीजल बहुउद्देशीय यूनिट कारशेड के साथ रेल कार रख-रखाव की सुविधा	100%	31.3.11 कार्य पूरा हुआ और चालू किया गया।

सिगनल एवं दूरसंचार निर्माण कार्य

कार्य	प्रगति	लक्ष्य
पानीटोला-डिब्रूगढ टाउन: स्टन्डर्ड III पैनल इन्टरलॉकिंग तथा एम.ए.सी.एल. द्वारा सिगनलों का अपग्रेडशन (राजधानी मार्ग, 5 स्टेशन)	पानीटोला से लाहोअल तक 4 स्टेशनों पर कार्य शुरू किया। डिब्रूगढ़ टाउन में पी.आई कार्य दिनांक 16.12.2010 को चालू किया गया।	कार्य पूरा हुआ।
न्यूजलपाईगुड़ी - बारसोई - मालदा टाउन व बारसोई - कटिहार मोबाइल ट्रेन रेडियो कम्युनिकेशन	कटिहार मंडल तथा अलीपुरद्वार मंडल के 'वे साइड सिस्टम' क्रमशः दिनांक 26.05.10 तथा 9.6.10 को ओपन लाइन को सौंप दिए गए।	कार्य पूरा हुआ।
न्यू जलपाईगुड़ी-बंगाईगांव-गुवाहाटी : मोबाइल ट्रेन रेडियो कम्युनिकेशन	पू.सी.रेल. मालीगांव का मोबाइल स्विचिंग केंद्र तथा रंगिया मंडल का 'वे साइड सिस्टम' देख-रेख हेतु क्रमशः 25.03.10 तथा 30.03.10 को ओपन लाइन को सौंप दिया गया।	कार्य पूरा करके तिनसुकिया मंडल को सौंपा गया।

वर्ष 2011-12 के लक्षित कार्य

- मैनागुड़ी रोड से न्यू चेंगराबांधा नई लाइन
- हारमुती से नाहरलागुन नई लाइन
- रंगिया से रंगापाड़ा नॉर्थ आमान परिवर्तन
- न्यूमाल जंक्शन से मैनागुड़ी रोड आमान परिवर्तन

पूरे किए गए सर्वेक्षण

क्रम सं	सर्वेक्षण का नाम	स्वीकृति वर्ष	राज्य	प्रगति
1.	सिवक-मिरिक (नई लाइन)	2011-12	पश्चिम बंगाल	100%
2.	सिवक-कालिंगपॉग (नई लाइन)	2011-12	पश्चिम बंगाल	100%
3.	न्यू बंगाईगांव-रंगिया-कामाख्या (दोहरीकरण)	2011-12	असम	100%
4.	न्यू बंगाईगांव से कामाख्या वाया ग्वालपाड़ा	2011-12	असम	100%
5.	सिलघाट से तेजपुर	2011-12	असम	100%

सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों का विदाई समारोह

निर्माण संगठन में जुलाई, अगस्त तथा सितंबर 2012 में सेवानिवृत्त हुए निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए विदाई समारोह आयोजित किए गए। इन अधिकारियों/कर्मचारियों को उनकी सेवानिवृत्ति के भुगतान संबंधी चैक तथा स्वर्ण जड़ित चांदी के पदक प्रदान किए गए। निर्माण संगठन, सेवानिवृत्त हुए इन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को उनके सुखद सेवानिवृत्त जीवन व पारिवारिक समृद्धि की कामना करता है।

क्रमांक	नाम	पदनाम	कार्यालय/विभाग	सेवानिवृत्ति माह
1.	श्री एम. दास	स.सि.व दूर स.इंजी.	मु.सि.व दूर स.इंजी/नि/मालीगांव	जुलाई,2012
2.	श्री शरत चंद्र डेका	प्यून/नि	उप मुख्य इंजी./नि/निविदा	जुलाई,2012
3.	श्री पी.के. ब्रह्म	मुख्य काधी/नि	महाप्रबंधक/नि/मालीगांव	अगस्त, 2012
4.	श्री बिमल दे	कनिष्ठ लिपिक/नि	महाप्रबंधक/नि/मालीगांव	अगस्त, 2012
5.	श्रीमती सविता पाल	पी.एस. II	महाप्रबंधक/नि/मालीगांव	सितंबर,2012
6.	श्री एम.सी. सर्गीयारी	एसएसई/नि/नक्शा	उप मुख्य इंजी/नि/डिब्रूगढ़	सितंबर,2012
7.	श्रीमती कामना राय	स.प्लान/रिकॉडर	उप मुंजी/नि/यो/मालीगांव	सितंबर,2012
8.	श्री हरिपद दास	एसडब्ल्यूएम/नि	उप मुंजी/नि/एनजेपी	सितंबर,2012
9.	श्री बालचंद यादव	वाहन चालक/नि	उपमुंजी/नि/कटिहार	सितंबर,2012
10.	श्रीमती कांचलता चाकमा	सीनियर ट्रैकमैन /नि	उपमुंजी/नि//मालीगांव	सितंबर,2012

बधाई

अधिकारियों को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

08 नवंबर, श्री अजय कुमार, उप मुंजी/नि/इम्फॉल/2

16 नवंबर, श्री एन.ब्रह्म, उप मुंजी/नि/अभि./1

24 नवंबर, श्री चंदन अधिकारी, मु.सि. व दू.इंजी./नि/1

01 दिसंबर, श्री टी.दैमारी, उप मुंजी/नि/वर्क्स

04 दिसंबर, श्री एस. कनौजिया, उप मुंजी/नि/एनएलपी/2

01 जनवरी, श्री मदन सेन, मुंजी/नि/2

01 जनवरी, श्री के. एन. तालुकदार, उप मुंजी/नि/योजना

01 जनवरी, श्री राजुकुमार दास, उप मुंजी./नि/सामान्य/2

10 जनवरी, श्री के. ए. नारायण, उप मु.सि.एवं दू.स.इंजी./नि/सर्वे

12 जनवरी, श्री अनिल कुमार, उप मुंजी./नि/सामान्य

12 जनवरी, श्री एन.जी.शीते, उप वि.स. एवं मुलेधि/नि/सिलचर

15 जनवरी, श्री डी.एन. प्रसाद, उप वि.स. एवं मुलेधि/नि/एनजेपी

15 जनवरी, श्री गौतम तालुकदार, उप मु.यांत्रिक इंजी./नि

21 जनवरी, श्री गौर गोपाल राय, उप मु.सि. व दू.स.इंजी./नि/यो

31 जनवरी, श्री एम.के. गर्ग, उप मुंजी./नि/लामडिंग/3

श्रद्धांजलि

श्री रवीन कुमार दास, बी/प्रींटर/निर्माण (वरिष्ठ जन संपर्क अधिकारी/नि के अधीन कार्यरत) का दिनांक 01.07.12 को देहांत हो गया। दिवंगत दास के आत्मा की शांति के लिए निर्माण संगठन के कार्यालय परिसर में दिनांक 03.07.2012 को शोक सभा आयोजित की गई।

श्री रंजीत कुमार दे, ई/प्यून/निर्माण (उप मुख्य इंजीनियर/नि/मालीगांव के अधीन कार्यरत) का दिनांक 11.07.12 को देहांत हो गया। दिवंगत दे के आत्मा की शांति के लिए निर्माण संगठन के कार्यालय परिसर में दिनांक 13.07.2012 को शोक सभा आयोजित की गई।

श्री दैवजीत बरदलै, कार्यवाही इंजीनियर/निर्माण/सिलापथार (उप मुख्य इंजीनियर/नि/सिलापथार-1 के अधीन कार्यरत) का दिनांक 16.07.12 को देहांत हो गया। दिवंगत बरदलै के आत्मा की शांति के लिए निर्माण संगठन के कार्यालय परिसर में दिनांक 19.07.2012 को शोक सभा आयोजित की गई।

श्री स्वपन कुमार साहा, लेखा सहायक (वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी/निर्माण के अधीन कार्यरत) का दिनांक 02.08.12 को देहांत हो गया। दिवंगत साहा के आत्मा की शांति के लिए निर्माण संगठन के कार्यालय परिसर में दिनांक 06.08.2012 को शोक सभा आयोजित की गई।

सफलता का रहस्य

बिना श्रम एवं अध्यवसाय के सफलता प्राप्ति के मार्ग पर चलना अंधेरे में ऐसी काली बिल्ली को प्राप्त करने का प्रयत्न है, जो वहाँ है ही नहीं। इस मार्ग पर चलने वाले मृग-तृष्णा के शिकार होते हैं। प्रकृति में स्थानापन्न अथवा एवजी पर काम का नियम नहीं है तथा भगवान के दरबार में एजेण्ट या दलाल अथवा बिचौलिया के लिए कोई स्थान नहीं है।

हो सकता है कि हमारा कोई प्रयत्न निष्फल हो जाए और हम निराश हो जाएं। पर निराश न होकर हमें विचार करना चाहिए कि सफलता प्राप्ति का मार्ग अपनाने में कहीं हमसे कोई भूल तो नहीं हो गई है।

इस संदर्भ में एक लघु कथा प्रस्तुत है जिससे यह प्रकट होगा कि कैसे प्रथम दृष्टया नष्ट होते हुए हमारे सपने किस प्रकार किसी अन्य मार्ग द्वारा साकार हो जाते हैं।

एक सूनी पहाड़ी पर तीन वृक्ष थे। वे आपस में बातें करते हुए अपने आशाओं, महत्वकांक्षाओं एवं अपने स्वप्नों की चर्चा किया करते थे। एक वृक्ष ने कहा- मेरी इच्छा है कि मुझे काटकर खजाना, धन-दौलत रखने का बक्सा बनाया जाए जिससे मैं स्वर्ण, रजत की मुद्राओं, जवाहरात आदि से भरा जाऊँ। मेरे ऊपर भाँति-भाँति की नक्काशी हो। लोग मेरी सुंदरता की प्रशंसा करें।

दूसरे वृक्ष ने कहा- मैं किसी दिन बहुत विशाल जलपोत बनूँ और राजा-रानियों को संसार के विभिन्न भागों में ले जाऊँ। मुझमें यात्रा करते समय प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षित अनुभव करेगा, क्योंकि मैं एक सुदृढ़ वृक्ष हूँ।

तीसरे वृक्ष ने कहा- मैं वन में सबसे ऊँचा वृक्ष बनना चाहता हूँ और चाहता हूँ एकदम सीधा बढ़ूँ। लोग मुझे देखकर समझेंगे कि मैं परमात्मा के कितने निकट हूँ। मैं विश्व में होने वाला सबसे ऊँचा वृक्ष बनूँगा और लोग मुझे युगों तक याद रखेंगे।

कुछ समय उपरांत लकड़ी के व्यापारी उधर पहुँचे। पहले वृक्ष को एक व्यापारी ने यह कहकर कटवाना शुरू कर दिया- "यह काफी सुंदर है। मैं इसकी लकड़ी को किसी बढ़ई के हाथों बेच दूँगा।" वृक्ष बहुत प्रसन्न था। बढ़ई उसका खजाना रखने का सन्दूक बनाएगा।

अगले व्यपारी ने दूसरे वृक्ष को यह कह कर कटवाना शुरू कर दिया-"यह काफी मजबूत है। मैं उसको जलपोत बनाने के कार्यालय को बेच दूँगा। वृक्ष बहुत प्रसन्न था। "मैं अब एक सुदृढ़ जलपोत बन जाऊँगा।"

जब एक व्यापारी तीसरे वृक्ष के पास आया, तो वृक्ष एकदम हताश हो गया, क्योंकि विश्व का सबसे लम्बा वृक्ष होने का उसका सपना अब कभी पूरा नहीं हो सकेगा। वृक्ष को देखकर व्यापारी ने कहा- "इस वृक्ष में मुझे कोई विशेष बात तो दिखाई नहीं दे रही है। चलो काटकर रख देते हैं।"

बढ़ई ने पहले वृक्ष को पशुओं का भोजन रखने का बक्सा बना दिया- उसमें दाना, घास, भूसा आदि भर दिया गया। दूसरे वृक्ष को मछली पकड़ने वालों की नाव बना दिया गया। एक विशाल सुदृढ़ जलपोत बनकर राजाओं-महाराजाओं, रानियों आदि को ले जाने का उसका सपना चूर-चूर हो गया। तीसरे वृक्ष को बड़े-बड़े टुकड़ों में काट कर एक अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया गया। वर्ष के बाद वर्ष व्यतीत होते गए। वृक्ष अपने सपनों को भूल गए। तब तक एक दिन एक दम्पत्ति नाज रखने की जगह पर पहुँचे। पत्नी ने एक बच्चे को जन्म दिया। उन्होंने भूसा आदि भरने के बक्से में सूखी घास रखी और बच्चे को लेटा दिया। प्रथम वृक्ष ने समझा कि वह अपने युग के सबसे बड़े खजाने के लिए पालना बन गया था।

कई वर्ष बाद द्वितीय वृक्ष द्वारा बनाई गई मछली पकड़ने की नौका में कुछ लोग यात्रा पर चल पड़े। उनमें एक व्यक्ति बहुत थका हुआ था। वह सो गया। थोड़ी देर के बाद बहुत जोर का तूफान आया। वृक्ष ने सोचा कि मैं इतना मजबूत नहीं हूँ कि इन यात्रियों की रक्षा कर सकूँ। जगते हुए व्यक्तियों ने सोते हुए व्यक्ति को झकझोर कर जागाया। उसने खड़े होकर कहा-'शांति' और तूफान थम गया। नौका रूपी द्वितीय वृक्ष को ज्ञात हुआ कि वह राजाओं के राजा को समुद्रों के पार ले गया था।

अन्ततः एक व्यक्ति आया, उसने तीसरे वृक्ष (बड़े-बड़े टुकड़ों के रूप में) उठाया और उसको गलियों में लेकर गुजरा। लोग उस पर हँस रहे थे, जो उसे लेकर जा रहा था। उस व्यक्ति को वृक्ष में (इस समय वह क्रॉस के रूप में परिवर्तित कर दिया गया था) तीन कीलों से जड़ दिया गया था क्रॉस को ऊपर हवा में उठाया गया और एक पहाड़ी पर पहुँचा दिया गया और मरने के लिए छोड़ दिया गया। वह अब परमात्मा के उतने पास था जितना सम्भव हो सकता था। वृक्ष ने अनुभव किया कि वह परमात्मा के एक दम निकट था, क्योंकि इस पर जीसस को क्रूसीफाई किया गया था (सूली दी गई थी)।

प्रत्येक वृक्ष ने वह प्राप्त किया जो उसका सपना था, उसकी महत्वकांक्षा थी- प्रथम वृक्ष ईसा का पालना बना, उनसे बड़ा खजाना दुनिया का अन्य कोई खजाना क्या हो सकता है ? द्वितीय वृक्ष ईसा को समुद्र के पार ले जाने वाली नौका बना और वह भी भयंकर तूफान के मध्य। इससे अधिक सुदृढ़ एवं भाग्यवान क्या कोई जलपोत हो सकता है ? तूफान को एक शब्द द्वारा शांत कर देने वाले परमात्मा ईसा बादशाहों के बादशाह हैं। उनसे बड़ा राजा कौन होगा ?

परमात्मा के बेटे को ऊँचा उठाकर खड़े होने वाले तृतीय

वृक्ष से अधिक ऊँचा अन्य वृक्ष क्या सम्भव है ?

तीनों वृक्षों ने जो चाहा, सो पाया, परंतु उन रूपों में नहीं जिनमें उन्होंने इच्छा की थी, परंतु सर्वथा भिन्न रूपों में। तत्काल नहीं कुछ समय उपरांत। स्मरण रखिए प्रत्येक कार्य के सिद्ध होने की एक विषेश पद्धति होती है, साथ ही उसका समय निर्धारित होता है-एक सुनिश्चित अवधि के पश्चात ही कोई बीज अंकुरित होता है तथा वृक्ष रूप में बड़ा होकर फूल-फलदायक बनता है। जल्दबाजी में छेड़-छाड़ करने पर कुछ भी हाथ नहीं लगता। कभी-कभी बीज एवं अंकुर दोनों नष्ट हो जाते हैं। युग-युगीन अनुभवों ने माली को सिखा दिया है कि उसका काम निरंतर सींचते देखभाल करते रहना है। ऋतु आने पर फूल-फल दोनों आ जाएंगे।

आप भी इधर-उधर मत भटकिए, न जल्दबाजी कीजिए, न दुःखी होइए। तीनों वृक्षों की तरह चुपचाप रहिए, जो रास्ता बनता जाए, उसपर पूरी निष्ठा के साथ कर्त्तव्य-पालन करते चलिए, आपके स्वप्न अवश्य साकार होंगे।

प्रकृति या परमात्मा ने आपकी सफलता की एक योजना बना रखी है, उसकी कार्य-पद्धति हमारी कार्य-पद्धति भले ही भिन्न हो, परंतु उसकी कार्य-पद्धति ही हमारे लिए सर्वोत्तम है।

साभार

"प्रतियोगिता दर्पण/जून/2012"

मेरी कविता

लिखती हूँ मैं "मेरी कविता"
एक बड़ी आशा लेकर,
एक दिन जरूर लिख पाऊंगी
कवियत्री बन मैं "मेरी कविता"।

होगी पुकार पूरी दुनिया में
मेरी हर नई कविता की,
लिखूंगी भारत और दुनिया की गाथा
एक दिन जरूर छपेगी मेरी कविता।

मेरी कविता के होठों पर
होगी वही गुलाबी मुस्कान,
आँखों में झलकेगा देशप्रेम
शुरू करेगी नया अभियान।

हर कविता होगी नेक सलाह
शायद कर सकेगी सबका भला,
रखेगी न किसी से द्वेष-भाव
मेरी कविता से फैलेगा प्रेम-भाव।

नाम : सुपर्णा दाहाल
कक्षा : X
सुपुत्री: श्री कमल दाहाल
प्यून/नि

लामडिंग-सिलचर आमान परिवर्तन परियोजना के अंतर्गत दयांग पुल सं.III/59